डॉ भीमराव अंबेडकर का सामाजिक दर्शन एवं प्रासंगिकता के सन्दर्भ में अध्ययन

[1]धरमिंद्र सिंह, [2]डॉ. रितेश मिश्रा

[1]शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान – विभाग, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत
[2]शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान – विभाग,
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत

Email ID: *dharmindersinghsus@gmail.com*

Accepted: 03.07.2022 **Published**: 01.08.2022

मुख्य शब्द: अम्बेडकर, सामाजिक और दर्शन।

शोध आलेख सार

इस लेख में, मैंने यह कोशिश की है कि कैसे अम्बेडकर ने अपने विचारों का निर्माण किया और स्वतंत्र और निष्पक्ष सार्वजनिक अस्तित्व के लिए विरोध किया। एक साथ लिया गया, ये विचार अस्तित्व के एक अलग राजनीतिक तरीके का सुझाव देते हैं जो एक ही समय में किसी की सदस्यता के सांस्कृतिक अर्थ पर प्रतिक्रिया करता है। अम्बेडकर, पारंपरिक मान्यताओं के विपरीत, असंबद्ध आधुनिकता का पालन नहीं करते हैं, बल्कि समाज और रीति–रिवाजों को समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका प्रदान करते हैं। के बजाए एक पक्षपातपूर्ण दूसरे के साथ बातचीत करते हुए, वह महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सुधार का आह्वान करता है। इंटरएक्टिव सामाजिक संबंध वह एजेंसी है जो हमें वह व्यक्ति बनाती है जो हम हैं और पूर्व शर्त निर्धारित करते हैं। मनुष्य कोई अतिमानव नहीं बल्कि मानव निर्मित है। ऐसे संदर्भों में लोकतंत्र अंततः मानव स्वयं के पूर्ण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। समानता की आवश्यकता है कि सभी को समान व्यवहार और जनसंपर्क में भाग लेने के समान अवसर दिए जाएं। व्यक्तियों के लिए निष्पक्ष न्याय के लिए समानता के विस्तार की आवश्यकता होगी, और बाद वाले को ठोस अर्थ का ध्यान रखना चाहिए। अम्बेडकर विश्वास को इस खोज की नींव के रूप में देखते हैं, लेकिन इस चरण में, धर्म को इस सांसारिक मामले के रूप में फिर से परिभाषित किया गया है। सच्चे धर्म का पैमाना लोगों को खुद को समझने की अनुमति देने की इसकी क्षमता है। मुक्ति एक विश्व मामला है, और प्रत्येक पुरुष और महिला इसके लिए उत्तरदायी हैं। मानव, संस्कृति, सरकार और विभिन्न प्रासंगिक पहलुओं के इर्द–गिर्द अपनी विचार–प्रक्रिया के विभिन्न तत्वों की इस चर्चा के बाद, डॉ अम्बेडकर ने यह मान लिया कि लोकतांत्रिक सोच और दर्शन का एक ढांचा नहीं बनाया गया था।

पहचान निशान

अम्बेडकर युग की शुरुआत से पहले, भारत में अछूते हिंदू थे जो हिंदू समाज के कारण अनादि काल से सामाजिक रूप से अपमानित, आर्थिक रूप से गरीब राजनीतिक रूप से दबे हुए और शैक्षिक और सांस्कृतिक अवसरों से वंचित रहे। ये लोग सभी मानवाधिकारों से वंचित थे।

हालांकि इन अपमानित लोगों को बहुत नुकसान हुआ, लेकिन लाखों अछूतों के राजनीतिक हितों की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। 1915 तक न केवल ब्रिटिश सरकार द्वारा बल्कि उभरती राजनीतिक ताकतों द्वारा भी उनकी उपेक्षा की गई। दलितों का कांग्रेस की राजनीतिक रणनीतियों में कोई स्थान नहीं था। राजनीतिक जागृति के विकास ने अछूतों के सामाजिक अलगाव की समस्या को नहीं पहचाना।

दलितों का राजनीतिक चित्रों में कोई स्थान नहीं था और उनकी स्थिति में सुधार के लिए कोई बदलाव नहीं आया था। वे अपने दयनीय अस्तित्व को घसीट रहे थे।

दलितों और उनकी समस्याओं के प्रतीक डॉ. अम्बेडकर ही थे। वह इतने पुराने सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करने के लिए ऐसे दलित वर्ग से उभरा। अछूतों की राजनीतिक मान्यता की दृष्टि से 1886 से राष्ट्रीय आंदोलन दो श्रेणियों में आता है:–

1) भारतीय राजनीति में 30 वर्षों की अवधि 1886 से 1915 तक गैर मान्यता द्वारा काम किया गया।

2) दूसरा जब उन्हें न केवल राजनीतिक दलों और सरकार द्वारा मान्यता दी गई, बल्कि उनकी मुक्ति के लिए भी बहुत काम किया गया।

डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के मुद्दे को पूरे दिल से उठाया। उन्होंने ऐसा दृढ़ कर्तव्य और दृढ़ संकल्प के साथ किया कि कोई उनके बारे में क्या सोचेगा। उन्होंने इस देश के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस, मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा ने अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को अपनी संस्कृति और धर्म से जोड़ा।

डॉ. अम्बेडकर, एक महान विचारक और शिक्षा में उनका योगदान

डॉ. अम्बेडकर उन दिनों प्रचलित शिक्षा प्रणाली की संस्कृति से संतुष्ट नहीं थे। वह जन शिक्षा के पक्ष में थे क्योंकि उस समय निम्न वर्ग (शूद्र/दलित) और महिलाओं को शिक्षा प्रणाली से वंचित कर दिया गया था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई समानता और स्वतंत्रता नहीं थी।

शिक्षा की कमी के कारण दलित मानसिक रूप से गुलाम, नैतिक रूप से निम्नीकृत, सांस्कृतिक रूप से विकलांग, आर्थिक रूप से कमजोर और सामाजिक रूप से पिछड़े हो गए और कोई सामाजिक स्थिति और सम्मान नहीं था। अम्बेडकर के गुरु महात्मा जोतिराव फुले के पराक्रमी प्रयासों का फल मिला और पहली बार भारत में महिलाओं और अछूतों की शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किए गए।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा सामाजिक प्रगति की कुंजी है। यह मनुष्य को अज्ञानता और अंधविश्वास के अपंग प्रभावों को दूर करने में मदद करता है और उसे अपनी क्षमता को अधिकतम संभव सीमा तक विकसित करने में सक्षम बनाता है।

यह मनुष्य को अपने अधिकारों के साथ–साथ अपने साथियों के प्रति दायित्वों के प्रति जागरूक करता है। इसलिए, शिक्षा एक समतामूलक समाज और सामाजिक परिवर्तन का बहुत महत्वपूर्ण साधन लाने का सर्वोत्तम संभव साधन है।

शिक्षा के उद्देश्य

डॉ. अम्बेडकर बौद्ध दर्शन से गहराई से प्रभावित थे और उन्होंने लोगों में नैतिकता के विकास की वकालत की। उन्होंने ऐसे उद्देश्यों को सार्थक बताते हुए जोर दिया जो मनुष्य को सुखी और समृद्ध बनाने में सहायता करते हैं और समाज की प्रगति में सहायता करते हैं। डॉ. अम्बेडकर के समय में अनेक बुराइयाँ व्याप्त थीं, जिनसे अस्पृश्यता थी। डॉ. अम्बेडकर ने पाया कि भारत के लोग मानसिक गुलाम और संस्कारी हैं।

साहित्य की समीक्षा

अम्बेडकर (1950) ने शीर्षक दी बुद्ध एण्ड दी फ्यूचर ऑफ हिज रिलीजनश में लिखा है कि दलित जातियों को अपने उत्थान के लिए आवश्यक है कि वह बौद्ध धर्म को स्वीकार करें क्योंकि बौद्ध धर्म में जातिवाद के लिए कोई जगह नहीं है वरन् समानता और पारस्परिक भाई–चारे की भावना होती है। बौद्ध धर्म का अनुसरण करने पर अछूत जाति के व्यक्तियों को समाज में अपना दर्जा बढ़ाने में मदद मिलेगी।

जैन, पुखराज (1996) ने अपनी पुस्तक भारतीय राजनीतिक चिन्तक में डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के जीवन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। आपका मानना है कि डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर को आधुनिक युग का मनु कहा जाता है। आपने डॉ० अम्बेडकर के जन्म से लेकर उनके बचपन, शिक्षा प्राप्त एवं विदेशी भ्रमण तथा विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्ति का व शिक्षा प्राप्ति के बाद उनके संघर्ष का वर्णन अपनी पुस्तक में किया है। इनके अतिरिक्त आपने अम्बेडकर के दलितों के उद्वार के किये गये प्रयासों व उसके लिए आवश्यक शिक्षा को बढ़ावा देने सम्बन्धी कार्यों का वर्णन किया है।

घुसिया (2004) 21वीं सदी का दलित समाज यथार्थ एवं चुनौतियाँ नामक अध्ययन में दलित समाज की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है। आपका मानना है कि स्वतंत्रता के बाद राज्य के संरक्षण से दलितों की राष्ट्रीय मुख्य धारा में सम्मिलित होने की प्रक्रिया तो आरम्भ हो गयी थी। इसके बाद भी यथार्थ यह है कि दलित समाज उसी सम्मान की तलाश में है जो सवर्ण जातियों को प्राप्त है।

शर्मा, अनुपमा (2004) आपने निर्धनता उन्मूलन के प्रयासों की सार्थकता अध्ययन में निर्धनता उन्मूलन के लिए प्रयासों की सार्थकता का अध्ययन किया है। आपने निर्धनता को सामाजिक विकास से जोड़कर देखा है। आपने बताया है कि मानव इतिहास के प्रारम्भ से ही निर्धनता विद्यमान रही है। ज्यों–ज्यों समय गुजरता गया और जनसंख्या में वृद्धि होती गयी गरीबी बड़े पैमाने पर दिखाई देने लगी।

शास्त्री, शंकरानन्द (2007) ने अपने अध्ययन बौद्ध धर्म में निर्धारित बाईस प्रतिज्ञाओं के महत्व को बताया है। आपका मानना है कि आज संसार में अनेक धर्म प्रचलन में हैं। इन सभी धर्मों की अपनी–अपनी मान्यताएँ एवं सिद्धान्त हैं जिनके आधार पर ही किसी भी धर्म का संचालन होता है। उसी प्रकार बौद्ध धर्म के मानने वालों के लिए उसकी बाईस प्रतिज्ञाओं को समझना आवश्यक है। तभी वह सही अर्थ में बौद्ध कहलायेगा।

आदित्य (2008) ने अपने शोध प्रपत्र में बाबा साहब अम्बेडकर के द्वारा सम्बोधित महार कान्फ्रेन्स के उद्देश्य के बारे में बताया कि बाबा साहब ने धर्म परिवर्तन के दो पहलू बताये हैं – पहला सामाजिक व धार्मिक, दूसरा यथार्थ व आध्यात्मिकता। आपने बताया कि हिन्दुओं के अत्याचारों से बचने के लिए बौद्ध धर्म को ग्रहण करना आवश्यक है। आपने यह भी बताया कि बौद्ध धर्म को स्वीकार करने से ही भौतिक सुख की प्राप्ति हो सकेगी।

डॉ0 अम्बेडकर (2008) ने अपने ग्रन्थ शूद्रों की खोज में शूद्रों का विस्तार से वर्णन किया है। इस पुस्तक में उन्होंने शूद्रों की वर्ण समस्या, शूद्रों की उत्पत्ति एवं राजनैतिक स्थिति के बारे में ब्राह्मणों का क्या मत रहा है का भी वर्णन किया है। बाबा साहब अम्बेडकर ने शूद्र और आर्य, आर्यों के विरूद्ध आर्य एवं शूद्र और दास, शूद्र क्षत्रिय हैं, वर्ण तीन हों या चार, ब्राह्मण और शूद्र, शूद्रों का पतन, संधि की कथा एवं सिद्धान्त की आलोचना नामक शीर्षकों पर भी गहनता से अध्ययन किया है। शूद्रों की खोज, पुस्तक को लिखने का उद्देश्य बाबा साहब का यह था कि यह मालूम किया जाय कि शूद्रों की उत्पत्ति कैसे हुई और उनके पतन का क्या कारण था।

एलनर (2009) ने अम्बेडकर की धम्म दीक्षा नामक पुस्तक में बौद्ध धर्म के प्रति उनके लगाव का वर्णन किया है। आपने बताया है कि बौद्ध धर्म के प्रति अम्बेडकर का लगाव बचपन से ही था फिर भी उन्होंने अन्य धर्मों का गहनता से अध्ययन किया और सभी धर्मों के धर्म–गुरुओं से विचार विमर्श जारी रखा। बाबा साहेब अम्बेडकर हिन्दू धर्म में बने रहने के लिए प्रयत्नशील थे लेकिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दू धर्म में न तो यह क्षमता पहले थी।

अंबेडकर की आर्थिक विचारधारा

अम्बेडकर ने प्रत्येक नागरिक की आधारभूत आवश्यकताओं को किसी भी लोकतंत्र का अनिवार्य तत्व माना। वह साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खिलाफ खुलकर सामने आए। अम्बेडकर अपने समय के सबसे अडिग आदर्शवादी थे। उन्होंने एक पूर्ण समानता की परिकल्पना नहीं की थी जिसे हासिल करना किसी भी समय असंभव होगा। उन्होंने अत्यधिक धन और स्पष्ट असमानताओं के प्रगतिशील और तर्कसंगत शमन को माना। उन्हें बैंकों के राष्ट्रीयकरण का स्पष्ट विचार था। उन्होंने खुद को समाजवाद और सार्वजनिक क्षेत्र के पक्ष में घोषित करने में एक कदम आगे बढ़ाया, जिसे पंडित जी ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमांडिंग ऊंचाई पर विजय प्राप्त करने की उम्मीद की थी। अम्बेडकर के अनुसार ''यदि विदेशी को हटा दिया जाए और आर्थिक प्रभार को प्राथमिकता दी जाए, और ऊर्जावान प्रशासन आसानी से दूरगामी सामाजिक सुधारों को लागू कर सके''।

अम्बेडकर का विचार था कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र, एक सामाजिक लोकतंत्र को अच्छी तरह से बनाना चाहिए क्योंकि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक कि उनके आधार ओम सामाजिक लोकतंत्र न हो।

अम्बेडकर ने सामाजिक स्थिति के वर्णन को सशक्त, राजनीतिक और आर्थिक भाषा में रखकर और भी ग्राफिक बना दिया है। वे कहते हैं, ''यह सबसे असंतोषजनक स्थिति है कि अधिकांश मनुष्य को शरीर और आत्मा को एक साथ रखने के लिए बोझ के जानवरों की तरह एक दिन में 14 साल पसीना बहाना पड़ता है, मस्तिष्क और मस्तिष्क का उपयोग करने के अवसर से पूरी तरह वंचित होना पड़ता है। मन जो हर इंसान की अनमोल संपत्ति है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने इसे काफी संभव बना दिया है, जो कुछ भी पहले हुआ हो। यह इसलिए है क्योंकि उत्पादन के साधनों अर्थात भूमि और कारखानों का कोई सामाजिक स्वामित्व नहीं है, इसलिए पुरुषों का कुछ लोगों द्वारा शोषण किया जाता है। जब इसे संभव बनाया जाएगा तो इसे वास्तविक सामाजिक क्रांति का आगमन माना जाएगा। ''

बी आर अंबेडकर और उनका राजनीतिक दर्शन

बीआर अम्बेडकर महान बुद्धिजीवी और समाज सुधारक थे। अपने करियर के शुरुआती दौर में उन्होंने अछूतों की दुर्दशा को महसूस किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन विशेष रूप से पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांत के संकट पर फिर से बातचीत करने और सामान्य रूप से लोगों की लड़ाई का नेतृत्व करने में सहायता करता है। समकालीन समय में दलित आंदोलन के उदय के साथ अम्बेडकर एक प्रमुख राजनीतिक दार्शनिक के रूप में उभरे हैं।

वह 1920 के दशक की शुरुआत में भारतीय सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में उभरे और अछूत कहे जाने वाले भारतीय समाज की सबसे निचली परत के उत्थान के लिए सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रयासों के प्रमुख बने रहे। बाबासाहेब एक महान शोधकर्ता थे जिन्होंने अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, कानूनी विद्वान, शिक्षाविद, पत्रकार, सांसद और एक समाज सुधारक और मानवाधिकारों के समर्थक के रूप में असाधारण योगदान दिया। बाबासाहेब ने भारत में अछूतों को संगठित, एकजुट और उत्साहित किया ताकि वे सामाजिक निष्पक्षता के अपने लक्ष्य के लिए राजनीतिक साधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। डॉ. अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र पर तीन विद्वानों की पुस्तकें लिखीं:

1. ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन और वित्त
2. ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास
3. रुपये की समस्याः इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान

पहले दो सार्वजनिक वित्त के क्षेत्र में उनके योगदान को दर्शाते हैं: पहला काम 1792 से 1858 की अवधि के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी के वित्त का मूल्यांकन करता है और दूसरी पुस्तक इस अवधि के दौरान ब्रिटिश भारत में केंद्र राज्य वित्तीय संबंधों के विकास का विश्लेषण करती है। 1833 से 1921 तक। तीसरी पुस्तक, अर्थशास्त्र में उनकी

महान कृति, मौद्रिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाती है।

अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन

राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक कि उसके आधार पर सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का क्या अर्थ है? इसका अर्थ जीवन का एक तरीका है जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में पहचानता है।'' —बीआर अम्बेडकर

अम्बेडकर अपने समय की कई प्रमुख राजनीतिक प्रथाओं से प्रभावित थे। उनके राजनीतिक विचार तीन महान राजनीतिक विचारधाराओं, अर्थात् वामपंथी, रूढ़िवादी और कट्टरपंथी से उत्पन्न हुए। उसने इन दोनों अभ्यासों को पार कर लिया है, जो उसका विशेष गुण है। यथार्थवादी अमेरिकी और उनके प्रशिक्षक जॉन डेवी के सिद्धांतों ने उन्हें प्रेरित किया था। फैबियन के एडविन आरए सेलिगमैन का उनके दर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव था। उन्होंने ब्रिटिश कंजर्वेटिव इंटेलेक्चुअल एडमंड बर्क का भी हवाला दिया, जबकि अम्बेडकर को कंजर्वेटिव नहीं कहा जा सकता।

अम्बेडकर की विचारधारा मुख्यतः धार्मिक और नैतिक है। उन्होंने बेजोड़ तरीके से भारतीय मान्यताओं और आध्यात्मिक संरचनाओं पर बारीकी से शोध किया। नैतिक उद्देश्यों के लिए भारतीय संस्कृति और इसकी संस्थाओं की कारवाई की व्याख्या पर केंद्रित, उन्होंने स्वतंत्रता, निष्पक्षता, राज्य और विशेषाधिकारों सहित राजनीतिक विचारों को पेश किया। वह जाति संस्था के आलोचक हैं, जो व्यक्ति और समग्र रूप से भारतीय समाज के अस्तित्व के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। यह अधिक स्पष्ट करता है कि व्यक्ति समुदाय से कैसे जुड़ा है और अन्य सामाजिक शक्तियां नागरिक की स्वतंत्रता को कैसे प्रतिबंधित करती हैं। वह हिंदू सत्तावादी सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते हैं और एक लोकतांत्रिक संस्कृति का समर्थन करते हैं। उन्होंने भारत के आध्यात्मिक और सामाजिक स्तंभों पर सवाल उठाया और गरीब नागरिकों को एक नई समझ के साथ जीवन दिया। उनका दृष्टिकोण तार्किक था। अपने लेखन और भाषणों में, कारण एक भूमिका निभाता है।

उपसंहार

बी.आर.अम्बेडकर ने 1920 में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। उन्होंने अपना जीवन दलित वर्गों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। वह अंग्रेजों से भारत की आजादी चाहते थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी भारत को स्वतंत्र करने के लिए एक जन आंदोलन का नेतृत्व कर रही थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के सिद्धांतों से सहमत न होने के कारण बी आर अम्बेडकर इसमें शामिल नहीं हुए।

हालाँकि, उन्होंने सोचा कि सरकार के साथ मित्रवत रहने से वे दलितों के अधिकारों को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, वह सरकार द्वारा दिए गए पदों और पदों को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते थे। 1920 में बी आर अम्बेडकर ने कोल्लौर के महाराजा के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया और दो सम्मेलनों में भाग लिया। 1927 में बॉम्बे लेजिसेटिव के सदस्य बने नामांकन द्वारा परिषद।

बी.आर. अम्बेडकर ने 1930—1932 तक अछूतों के नेता के रूप में लंदन में ब्रिटिश सरकार द्वारा आयोजित तीन गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया।

उन्होंने भारत में अछूतों की अमानवीय स्थितियों को प्रस्तुत किया और उनकी रक्षा करने में विफल रहने के लिए ब्रिटिश सरकार को फटकार लगाई। दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचक मंडल की उनकी मांग के परिणामस्वरूप पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते ने भारत के किसी भी भविष्य में दलितों के लिए एक निष्पक्ष और न्यायसंगत सौदा सुनिश्चित किया।

उनकी अध्यक्षता में मसौदा समिति द्वारा तैयार किए गए मसौदे को 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा सराहा गया और अनुमोदित किया गया। यहां यह देखा जाना चाहिए कि स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के महान आदर्शों के प्रयासों से इसमें निहित हैं। उन्होंने नेहरू के मंत्रिमंडल में एक कानून मंत्री की भी सेवा की। स्वतंत्रता और समानता के प्रति अछूत। डॉ. अम्बेडकर इस जीवन में एक ''मिशन'' वाले व्यक्ति थे। मिशन अस्पृश्यता का उन्मूलन और उचित राजनीतिक कारवाई के माध्यम से राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक न्याय हासिल करना था।

संदर्भ

- डॉ अम्बेडकर, बौद्ध धर्म और सामाजिक परिवर्तन, एके नारायण और डीसी अहीर (संस्करण), दिल्ली, बीआर प्रकाशन, पीपी 99–122।
- भारती, एके (2001) दलित उत्थान की डॉ. अम्बेडकर दृष्टि। पर उपलब्धः
- देसाई, एआर (1959) सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, पॉपुलर प्रकाशन (बॉम्बे), 1959, पृष्ठ 244।
- जॉर्ज, गोल्डी एम (2010) सलाम भीमराव! डॉ, भीमराव रामजी अंबेडकर एंड द दलित मूवमेंट इन इंडियाः ए रिफ्लेक्शन।
- कुबेर, डब्ल्यूएन, डॉ. अम्बेडकरः ए क्रिटिकल स्टडी, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1973।
- कुमार, पी.केशव (2010) बीआर अंबेडकर का राजनीतिक दर्शनः एक महत्वपूर्ण समझ। अछूत वसंत।
- लाल, श्याम (1998) ''अम्बेडकर और सामाजिक न्याय'' श्याम लाल और केएस सजेना में, (संस्करण), अम्बेडकर और राष्ट्र निर्माण, रावत प्रकाशन, जयपुर, ए रंजीत कुमार में उद्धृत, ''सामाजिक न्याय की अमेडकर की धारणा– अलग परिप्रेक्ष्य, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च, दिसंबर, 2011।
- लोखंडे, डी., भीमराव रामजी अम्बेडकरः ए स्टडी इन सोशल डेमोक्रेसी, इंटेलेक्चुअल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1973।
- महाजन, गुरप्रीत. आइडेंटिटीज एंड राइट्सः एस्पेक्ट्स ऑफ लिबरल डेमोक्रेसी इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली। 1988
- वर्मा, वीपी, मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल थॉट, एजुकेशनल पब्लिशर्स, आगरा, 1980।
- संदर्भ
- 1. भारत का संविधान।